हिन्दुस्तान लखनऊ • मंगलवार • 10 फरवरी 2015

गन्ना उपज बढ़ाने की तकनीक सीखी

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में सोमवार को बिहार के गन्ना किसानों के लिए पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन निदेशक डा. ओके सिन्हा ने किया।

संस्थान में प्रशिक्षण प्रभारी डा. एके शाह ने बताया कि कार्यक्रम में बिहार के हरिनगर तथा नरकटिया गंज चीनी मिल क्षेत्रों के 50 गन्ना किसानों ने गन्ना खेती के लिये नई तकनीक की जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण 13 फरवरी तक चलेगा।

लखनऊ, 10 फरवरी 2015 दैनिक जागरण

बिहार के किसान सीख रहे गन्ना उत्पादन की तकनीक

◆ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में पांच दिवसीय प्रशिक्षण

जागरण संवाददाता,लखनऊ : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में सोमवार से पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में बिहार के किसान गन्ने की उपज बढ़ाने की तकनीक सीखेंगे।

कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ.ओके. सिन्हा ने किया। डॉ. सिन्हा ने कहा कि कम उत्पादकता, चीनी परता तथा उत्पादन लागत का बढ़ता स्तर आज सबसे बड़ी चिंता है। गन्ने की कम उपज के लिए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में खेती के अनुरूप जलवायु का न होना, जलमग्नता, उन्नत किस्मों की कमी, गिरता मृदा स्वास्थ्य तथा छोटी जोत प्रमुख कारक है। इन समस्याओं के समाधान में प्रशिक्षण अहम् भूमिका निभाता है।

प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. एके साह ने बताया कि बिहार में गन्ना उपज लगभग 45-50 टन प्रति हेक्टेयर है, जो कि राष्ट्रीय उत्पादकता स्तर लगभग 70 टन प्रति हे. से काफी कम है इस कारण बिहार के किसानों को मेहनत के बावजूद उचित मुनाफा नहीं मिल पाता है। प्रशिक्षित कृषक अपने-अपने क्षेत्रों में गन्ना प्रहरी का कार्य करते हुये उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

किसान सीख रहे गन्ना उपज बढ़ाने की तकनीक

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। संस्थान के निदेशक डॉ. ओके सिन्हा ने कम गन्ना उत्पादकता, कम चीनी परता व उत्पादन लागत के बढ़ते स्तर को आज का सबसे बड़ा विचरणीय विषय बताया। कम गन्ना उपज के लिए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में गन्ना खेती अनुरूप जलवायु का न होना, जलमग्नता, उन्नत किस्मों की कमी, गिरता मृदा स्वास्थ्य व छोटी जोत को प्रमुख कारण है। इसके समाधान में प्रशिक्षण कार्यक्रम अपनी अहम भूमिका है।

एके साह ने बताया कि बिहार में गन्ना उपज लगभग 45-50 टन प्रति हेक्टेअर है, जो कि राष्ट्रीय उत्पादकता स्तर लगभग 70 टन प्रति हेक्टेअर से काफी कम है, इस कारण बिहार के गन्ना किसानों को मेहनत के बावजूद उचित मुनाफा नहीं मिल पाता है। इस समय बिहार की 28

■ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में शुरू हुआ पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

चीनी मिलों में सिर्फ 12 मिलों में ही पेराई हो रही है, जिससे गन्ना व चीनी उद्योग आर्थिक बदहाली की स्थिति में है। बिहार के किसानों को वहां की जलवायु के लिए उन्नत गन्ना किस्मों, जलभराव की स्थिति में गन्ना खेती की उन्नत तकनीक, एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन, गन्ना बोआई विधियां गन्ने के साथ सहफसली खेती, गन्ने के नाशीकीटों व बीमारियों की पहचान एवं प्रबन्धन, सिंचाई जल बचत तकनीक, आधुनिक कृषि यंत्रों की जानकारी दी जाएगी। इन किसानों को प्रदेश की चीनी मिलों और प्रगतिशील किसानों के खेतों का भी भ्रमण करवाया जाएगा।

नई दिल्ली, मंगलवार, 10 फरवरी, 2015

भवदीय प्रभात

भारतीय गन्ना अनुसंधान में बिहार के कृषक सीख रहे हैं गन्ना उपज बढ़ाने की तकनीक

लखनऊ(भवदीय प्रभात)।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में सोमवार को बिहार के गन्ना किसानों के लिए पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम फरवरी 9-13, 2015 को आयोजित किया जा रहा है जिसमें बिहार के हरिनगर तथा नरकटिया गंज चीनी मिल क्षेत्रों के 50 गन्ना किसान गन्ना खेती के लिये नवीनतम तकनीक में जानकारी प्राप्त करने के लिए सहभागिता कर रहे हैं। यह प्रशिक्षण ईख विकास विभाग, गन्ना उद्योग, बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डा0 ओ0 के0 सिन्हा ने किया। अपने उद्घाटन उद्बोधन में डा0 सिन्हा ने कहा कि कम गन्ना उत्पादकता, कम चीनी परता तथा उत्पादन लागत का बढ़ता स्तर आज सबसे बड़ी चिंता है। कम गन्ना उपज के लिए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में गन्ना खेती अनुरूप जलवायु का न होना, जलमग्नता, उन्नत किस्मों की कमी, गिरता मृदा स्वास्थ्य तथा छोटा जोत प्रमुख कारक है। इन समस्याओं के समाधान में इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम अपनी अहम भूमिका निभाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए संस्थान में प्रशिक्षण प्रभारी डा0 ए0के0 साह ने बताया कि बिहार में गन्ना उपज लगभग 45-50 टन/हे0 है जो कि राष्ट्रीय उत्पादकता स्तर लगभग 70 टन/हे0 से काफी कम है। इस कारण बिहार के गन्ना किसानों को मेहनत के बावजूद उचित मुनाफा नहीं मिल पाता है। आज बिहार में उपलब्ध 28 चीनी मिलों में सिर्फ 12 मिलों में ही पेराई हो रही है जिससे गन्ना व चीनी उद्योग आर्थिक बदहाली की स्थिति में है। वहां के चीनी व गन्ना उद्योग को खुशहाल बनाने में संस्थान हर संभव प्रयास कर रहा है और इसी दिशा में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है।